केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में 53वां संस्थान स्थापना दिवस मनाया गया।

आज संस्थान में 53वां संस्थान स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। माननीय मुख्य अतिथि डा0 चिन्दी वासुदेवप्पा, उप कुलपति, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता और प्रबंधन संस्थान, सोनीपत, ने समारोह का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि किसानों की आय दुगनी करने में नई खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी एवं उद्यमशीलता एक महत्वपुर्ण भुमिका अदा कर सकती है। कृषि उत्पादों जैसे गेहूँ, धान, चना, मक्का, फल सब्जियों के लिए उद्यम लगाकर इनसे अन्य खाद्य प्रदार्थ जैसे की बिस्किट, केक, जेम, मुरब्बा इत्यादि बना कर बेचने से किसानों की आमदनी बढ सकती है। कृषि वैज्ञानिक उत्पादन बढाने के लिए काफी शोध कर रहे हैं। बागवानी फसलें फल सब्जियां इत्यादि उत्पादन बढाने में मुख्य भुमिका अदा कर सकती हैं। इसके लिये उत्पाद की गुणवत्ता का भी ध्यान रखना होगा। कौशल विकास भी किसानो की आय बढाने में सहायक होगा। टमाटर व आलू के वेस्ट से बायोडिग्रेडेबल पैकट बनाए जा सकते हैं। जिससे प्लास्टिक की थैलियो का प्रयोग बन्द हो जाएगा। देशभर में खाद्य प्रदार्थो की गुणवत्ता जांचने के लिये 300 प्रयोगशालाए हैं। उन्होने विश्वास व्यक्त किया कि नई खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के प्रयोग से देश में नई खाद्य क्रांति आ सकती हैं। किसानों में जागरूकता बढाने के लिये देशभर में व्यापक प्रचार प्रसार की जरूरत है। उन्होने संस्थान में शोध प्रक्षेत्रों का दौरा किया तथा संस्थान में हो रहे शोधकार्यो की प्रशंसा की। उन्होंने वैज्ञानिकों को आह्वान करते हुए कहा कि वह कड़ी मेहनत से शोध अनुसंधान पर कार्य करें।

इस से पूर्व संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि, मंच व सभागार में उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों का विस्तार से वर्णन करते हुए संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। इस समय देश में 6.73 मिलियन हैक्टेयर भूमि लवण प्रभावित है। इस संस्थान ने 2.14 मिलियन हैक्टेयर भुमि का सुधार कर दिया है। संस्थान द्वारा जिप्सम टेक्नोलिजी, भुमिगत जल प्रणाली, जीरो टिलेज, संरद्वित कृषि, बहुधंधी कृषि प्रणाली का विकास किया हैं। लवणग्रस्त मृदाओं के लिये धान गेहूँ सरसों व चना की लवणसहनशील प्रजातियों का विकास किया गया है। इनके प्रयोग करने से खेती में लागत में कमी आती है व उत्पादन बढता है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान के 1 शोध बुलेटिन व 2 फोल्डर्स का विमोचन किया। मुख्य अतिथि तथा संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के डा. एम. जे. कलेढोनकर, परियोजना समन्वयक व डा. एच. एस. जाट, प्रभारी अधिकारी, परियोजना प्राथमिकता, प्रबंधन एवं मुल्याकन इकाई को वर्ष 2019 के लिये संयुक्त रूप से संस्थान के सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस अवसर पर लगभग 250 वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया।